कितना सुरक्षित है ओरल पोलियो वैक्सीन?

टी. जैकब जॉन

हाल ही में फ्रांस, जर्मनी, कनाडा व यू.एस.ए. जैसे कुछ सम्पन्न देशों ने पोलियो की रोकथाम हेतु इनएक्टिवेटेड पोलियो वैक्सीन (IPV) को प्राथमिकता देकर एक नीतिगत बदलाव किया है। इस बदलाव ने जीवित ओरल पोलियो वैक्सीन (OPV) के सुरक्षा सम्बंधी मुद्दे को चर्चे में ला दिया है। इसी सिलसिले में ऑस्ट्रिया व इटली ने भी OPV के मुकाबले IPV को तरजीह दी है ताकि वैक्सीन-वायरस-जनित पक्षाघाती पोलियो का खतरा कम हो। डेनमार्क और इज़राइल सालों से दोनों ही तरह के वैक्सीन का उपयोग करते आए हैं। जबकि स्केण्डीनेवियन देशों तथा नीदरलैण्ड में हमेशा से ही IPV का उपयोग होता रहा है। अगर दो उत्तर अमेरिकी देशों की तरह पश्चिम यूरोप के भी सभी देशों में एक ही प्रकार की पोलियो प्रतिरक्षा नीति का पालन किया जाता है, तो शेष विश्व की आम राय भी OPV की अपेक्षा IPV के ही पक्ष में जाएगी। इस मुकाम पर हमारे समक्ष भारत जैसे देशों में OPV की सुरक्षात्मकता का प्रश्न आ खड़ा होना स्वाभाविक है।

भारत में अब तक OPV व IPV के नफे-नुकसान को लेकर हुई बहसें मुख्यतः इनकी क्षमता के आसपास ही केन्द्रित रही हैं। पोलियो से सुरक्षा दिलाने में जितनी कारगर IPV की दो या तीन खुराकें हैं, उतनी सुरक्षा पाने के लिए OPV की दस या उससे भी अधिक खुराकें देनी पड़ती हैं। हां यह बात अलग है कि भारत में राष्ट्रीय पल्स पोलियो अभियान के ज़रिए लगभग हर बच्चे को इतनी ज़्यादा संख्या में OPV की खुराकें देना तुलनात्मक रूप से प्रबंधनीय है। एक मोटे अनुमान के मुताबिक IPV की ऊंची कीमत साल में कई-कई बार अभियानों के ज़रिए OPV दिए जाने में होने वाले खर्च के बराबर (या उससे कम) ही ठहरेगी। साथ ही OPV की इतनी ज़्यादा खुराकों से होने वाली समूह-प्रतिरक्षा IPV की तुलना में कम न होगी। इसलिए भारत व इस जैसे अन्य देशों के लिए वास्तविक व विवेकपूर्ण निर्णय यही होगा कि वाइल्ड वायरस पोलियो की समाप्ति तक OPV का उपयोग जारी रखा जाए। एक बार वाइल्ड वायरस समाप्त हो जाने के बाद OPV के सुरक्षा सम्बंधी मुद्दे खासे महत्वपूर्ण हो जाएंगे; नैतिक व वैज्ञानिक दोनों हिसाब से।

पोलियो से सुरक्षा दिलाने में जितनी कारगर IPV की दो या तीन खुराकें हैं, उतनी सुरक्षा पाने के लिए OPV की दस या उससे भी अधिक खुराकें देनी पड़ती हैं। हां यह बात अलग है कि भारत में राष्ट्रीय पल्स पोलियो अभियान के ज़रिए लगभग हर बच्चे को इतनी ज़्यादा संख्या में OPV की खुराकें देना तुलनात्मक रूप से प्रबंधनीय है। एक मोटे अनुमान के मुताबिक IPV की ऊंची कीमत साल में कई-कई बार अभियानों के ज़रिए OPV दिए जाने में होने वाले खर्च के बराबर (या उससे कम) ही ठहरेगी।

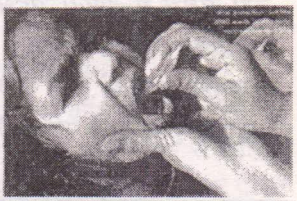

आगे बढ़ने से पहले ज़रा पीछे जाकर देखते हैं कि OPV को सुरक्षित होने का प्रमाण किसने दिया? इसके ऐतिहासिक विवरण से कुछ अप्रिय आश्चर्य सामने आते हैं। 1955 में यू.एस. फूड एण्ड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन (एफ.डी.ए.) ने वैक्सीन की सुरक्षा व क्षमता को ध्यान में रखकर वृहत पैमाने पर परीक्षण किए। इसके बाद साल्क IPV को लाइसेन्स दिया गया। इस वैक्सीन के लगातार प्रयोग से पोलियो की घटनाओं में लगातार कमी आने लगी। इसलिए जब सैबिन OPV विकसित हुआ तब इसके व्यापक परीक्षण नहीं किए गए। सैबिन (कम्पनी) ने यू.एस.एस.आर. (तत्कालीन रूस) को अपने वैक्सीन के